

शिक्षा का बदलता स्वरूप: गुरुकुल परंपरा से डिजिटल शिक्षा तक

डॉ राजीव कुमार

सहायक प्राध्यापक इस्लामिया टीचर्स ट्रेनिंग B-Ed कॉलेज पटना, भारत

DOI: <https://doi.org/10.66856/ijhssr.2025.11.3.12328>

सारांश

भारतीय शिक्षा का इतिहास गुरुकुल परंपरा से शुरू होकर आधुनिक डिजिटल शिक्षा तक एक महत्वपूर्ण और गतिशील यात्रा रही है। प्राचीन काल में गुरुकुल प्रणाली छात्रों के समग्र विकास पर केंद्रित थी, जहाँ गुरु-शिष्य का संबंध अत्यंत घनिष्ठ, व्यक्तिगत और आजीवन था। इस परंपरा में ज्ञान, चरित्र-निर्माण, नैतिकता और आध्यात्मिक विकास को समान महत्व दिया जाता था। वर्तमान समय में डिजिटल शिक्षा ने तकनीकी संसाधनों, ऑनलाइन माध्यमों, दूरस्थ शिक्षण और स्व-निर्देशित अधिगम को बढ़ावा दिया है। यह अध्ययन भारत में गुरुकुल से डिजिटल शिक्षा तक के परिवर्तन को व्यवस्थित ढंग से विश्लेषित करता है। गुणात्मक और तुलनात्मक शोध विधि के माध्यम से साहित्य समीक्षा की गई। प्रमुख निष्कर्ष दर्शाते हैं कि शिक्षा के लक्ष्य, शिक्षक की भूमिका, शिक्षण-पद्धति, शिक्षार्थी-शिक्षक संबंध और मूल्य-शिक्षा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। तथापि, मानवीय संबंध, चरित्र-विकास और नैतिक मूल्यों की आवश्यकता निरंतर प्रासंगिक है। निष्कर्ष में भारतीय शिक्षा को पारंपरिक मूल्य-आधारित शिक्षा और आधुनिक तकनीकी संसाधनों के संतुलित उपयोग की आवश्यकता है, ताकि एक समग्र और समावेशी शिक्षा व्यवस्था विकसित हो सके।

मुख्य शब्द: गुरुकुल परंपरा, डिजिटल शिक्षा, शिक्षक की भूमिका, मूल्य-शिक्षा, शिक्षा का रूपांतरण

परिचय

भारतीय शिक्षा प्रणाली विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध परंपराओं में से एक है। प्राचीन भारत में शिक्षा का आधार गुरुकुल व्यवस्था थी, जहाँ छात्र अपने गुरु के आश्रम में आकर रहते थे और केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन-कौशल, आचरण और आध्यात्मिक विकास सीखते थे। गुरुकुल परंपरा में ज्ञान का संचरण केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं था, बल्कि गुरु अपने जीवनानुभव, मूल्य-आधारित व्यवहार और आत्मीय संबंध के माध्यम से छात्रों को शिक्षित करते थे। (गुप्ता और राजेन्द्र सिंह, 2021) गुरु-शिष्य का यह संबंध अत्यंत घनिष्ठ, विश्वास पर आधारित और आजीवन चलने वाला था। प्राचीन काल में धर्म, संस्कृति, शास्त्र, विज्ञान, दर्शन, साहित्य, कला और युद्ध-कौशल का शिक्षण समान रूप से अनिवार्य था। (शर्मा, 2018) गुरुकुल शिक्षा का मुख्य दार्शनिक आधार वेदांत और उपनिषद् की शिक्षाओं में निहित था, जिसका उद्देश्य प्रत्येक छात्र को आत्मसंवेदन, आत्मनिर्भरता और सामाजिक दायित्वबोध से परिपूर्ण एक जिम्मेदार नागरिक बनाना था।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में 19वीं और 20वीं सदी में महत्वपूर्ण और दूरगामी परिवर्तन आए। औपनिवेशिक प्रभाव के कारण पाश्चात्य शिक्षा व्यवस्था का व्यापक प्रवेश हुआ। संस्थागत शिक्षा, औपचारिक और निर्धारित पाठ्यक्रम, बहु-स्तरीय परीक्षा प्रणाली और वर्गीकृत शिक्षा ने गुरुकुल परंपरा को क्रमशः हाशिए पर छोड़ दिया। (द्विवेदी, 2017) शिक्षकों की भूमिका में मौलिक परिवर्तन हुआ। वे अब केवल ज्ञान के संचारक मात्र रह गए, न कि समग्र व्यक्तित्व विकास के मार्गदर्शक। स्कूल और विश्वविद्यालय केंद्रीकृत, नियम-संचालित संरचना में संगठित हो गए। मूल्य-शिक्षा, चरित्र-निर्माण और आध्यात्मिक विकास की जिम्मेदारी धीरे-धीरे कम होती गई। (मिश्र, 2020) शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाओं से अंग्रेजी हो गया, जिससे सांस्कृतिक संदर्भ में परिवर्तन आया।

21वीं सदी में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का तीव्र और व्यापक विकास हुआ। शिक्षा क्षेत्र में भी कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल प्रौद्योगिकी और डिजिटल माध्यमों का उपयोग तेजी से बढ़ने लगा। भारत में विशेषकर कोविड-19 महामारी के बाद ऑनलाइन

शिक्षा को बड़े पैमाने पर और तत्काल रूप से अपनाया गया, जिससे शिक्षा प्रणाली को नई चुनौतियों और अवसरों का सामना करना पड़ा। (कौल, 2024) डिजिटल शिक्षा ने भौगोलिक सीमाओं को तोड़ा और विस्तृत और विविध दर्शकों तक ज्ञान पहुंचाना संभव बनाया। इसने शिक्षार्थियों को स्व-निर्देशित अधिगम का स्वतंत्रता भी प्रदान की। तथापि, डिजिटल विभाजन, इंटरनेट पहुंच में असमानता, डिजिटल साक्षरता की कमी और मानवीय संबंधों में गिरावट नई और गंभीर चुनौतियाँ बन गई हैं। (प्रकाश और सुमन, 2024)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने गुरुकुल परंपरा के मूल्यों को आधुनिक शिक्षा में पुनः समन्वित करने का एक सकारात्मक और दूरदर्शी प्रयास किया है। यह शोध-पत्र भारत में गुरुकुल परंपरा से डिजिटल शिक्षा तक के रूपांतरण को व्यवस्थित और विश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है। गुरुकुल और डिजिटल शिक्षा दोनों के बीच शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण-पद्धति, गुरु-शिक्षक की भूमिका, शिष्य-शिक्षार्थी की स्वायत्तता, मूल्य-शिक्षा, ज्ञान-संचरण की प्रक्रिया, तकनीकी पहुँच, समावेशन और शैक्षिक प्रभावों के आयामों पर विस्तृत विश्लेषण किया जाता है। शोध-अंतराल यह है कि भारतीय शिक्षा के इस परिवर्तन को केवल "पुरानी बनाम नई" की सरल द्विभाजन में नहीं, बल्कि एक निरंतर, बहु-आयामी ऐतिहासिक-शैक्षिक प्रक्रिया के रूप में समझने की गहरी आवश्यकता है।

साहित्य समीक्षा

गुरुकुल शिक्षा की अवधारणा और विकास

गुरुकुल भारतीय शिक्षा व्यवस्था का आधारभूत और समग्र स्वरूप था। यह केवल एक विद्यालय या संस्थान नहीं बल्कि एक आश्रम था जहाँ गुरु और शिष्य एक साथ निवास करते थे, एक-दूसरे के साथ रहते हुए जीवन के सभी पहलुओं को सीखते-सिखाते थे। (द्विवेदी, 2017) गुरुकुल में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान अधिग्रहण नहीं बल्कि आत्म-साक्षात्कार, आत्मनिर्भरता और समग्र व्यक्तित्व विकास था। (शर्मा, 2018) गुरु-शिष्य संबंध अत्यंत घनिष्ठ था और यह विश्वास, सम्मान, समर्पण और परस्पर अनुराग पर आधारित था। गुरुकुल व्यवस्था में अनुशासन कठोर

किंतु न्यायसंगत था, जिसका उद्देश्य छात्र को आत्म-नियंत्रण और आत्मबोध सिखाना था। (वाजपेयी, 2019) छात्रों को ब्रह्मचर्य, तपस्या, सेवा और गुरुभक्ति का कठोर पालन करना पड़ता था। ज्ञान का संचरण मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से होता था, जहाँ स्मृति, ध्यान-शक्ति और तीक्ष्ण बुद्धि अत्यंत महत्वपूर्ण थे। गुरुकुल शिक्षा का पाठ्यक्रम चौदह विद्याओं तक विस्तृत था, जिनमें साहित्य, गणित, विज्ञान, दर्शन, कला, संगीत, शास्त्र और युद्ध-कौशल सभी सम्मिलित थे।

गुरुकुल शिक्षा में समावेशन और सामाजिक आयाम

गुरुकुल परंपरा के समावेशन का प्रश्न ऐतिहासिक रूप से जटिल और विवादास्पद रहा है। प्राचीन काल में गुरुकुलों में मुख्यतः सवर्ण ब्राह्मण और क्षत्रिय पृष्ठभूमि के छात्रों को प्रवेश मिलता था। अधिकांश पारंपरिक गुरुकुलों में महिलाओं, दलितों और अन्य समुदायों को औपचारिक शिक्षा से व्यवस्थित रूप से वंचित रखा गया था। (अधिकारी, 2023) तथापि, कुछ असाधारण और ऐतिहासिक अपवाद भी मिलते हैं जहाँ महिला ऋषिकाओं, दलित ऋषियों और निम्न वर्गीय विद्वानों के संदर्भ प्राचीन ग्रंथों में दर्ज हैं। सामाजिक संरचना में वर्ण-आधारित जाति-व्यवस्था गुरुकुल शिक्षा को गहराई से प्रभावित करती थी। शिक्षा प्राप्ति का अवसर मुख्यतः वर्ण और आर्थिक स्थिति पर निर्भर था। शुक्ला (2016) के विश्लेषण में गुरुकुल शिक्षा को भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के रूप में चिन्हित किया गया है, किंतु इसकी सामाजिक सीमाओं को भी स्वीकार किया गया है। हालाँकि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने गुरुकुल परंपरा को पुनः समावेशी, सार्वभौमिक और सभी सामाजिक वर्गों के लिए सुलभ बनाने का एक महत्वाकांक्षी और प्रगतिशील प्रयास किया है।

आधुनिक शिक्षा की ओर संक्रमण

19वीं सदी में भारत में शिक्षा का रूपांतरण एक क्रमिक, ऐतिहासिक प्रक्रिया थी। मैकॉली मिनट्स ऑफ एजुकेशन (1835) के बाद अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा व्यवस्था को राजकीय संरक्षण और प्रोत्साहन दिया गया। संस्थागत शिक्षा, वर्गीकृत और निर्धारित पाठ्यक्रम, औपचारिक परीक्षा प्रणाली और शिक्षक-प्रशिक्षण आधुनिक भारतीय शिक्षा की मुख्य विशेषताएँ बनीं। (पटेल, 2018) शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाओं से अंग्रेजी हो गया, जिससे भारतीय ज्ञान-परंपरा से सांस्कृतिक दूरी बढ़ी। स्कूलों और विश्वविद्यालयों में ज्ञान को विभिन्न विषयों में विभाजित किया गया। गुरु-शिष्य संबंध प्रशिक्षक-छात्र के अधिक सामूहिक, संस्थागत और सीमित संबंध में बदल गया। कुमार (2025) के अध्ययन में प्राचीन भारतीय गुरुकुल प्रणाली के आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर दीर्घकालिक और बहुआयामी प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। मिश्र (2020) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को संदर्भित करते हुए कहा कि गुरुकुल परंपरा की कुछ बुनियादी और शाश्वत बातें आधुनिक शिक्षा में भी प्रासंगिक हैं।

डिजिटल शिक्षा और शिक्षक की बदलती भूमिका

21वीं सदी में सूचना-प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर नेटवर्क और डिजिटल संचार ने शिक्षा क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया। ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म (MOOC, Google Classroom आदि), ई-लर्निंग सामग्री, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, आभासी कक्षाएँ और डिजिटल मूल्यांकन उपकरणों ने पारंपरिक कक्षा-कक्ष के लचीले विकल्प प्रदान किए। कोविड-19 महामारी (2020-2021) के बाद भारत में दूरस्थ और ऑनलाइन शिक्षा अचानक अनिवार्य हो गई। (कौल, 2024) डिजिटल माध्यमों ने शिक्षार्थियों को स्वतंत्र, स्व-निर्देशित और आत्मनिर्भर रूप से सीखने का महत्वपूर्ण अवसर दिया। शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन हुआ, वह सीधे ज्ञान-संचारक से परोक्ष रूप से सुविधादाता और मार्गदर्शक में

बदल गया। शंवाल (2024) ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के विकास का विश्लेषण करते हुए दिखाया कि आधुनिक शिक्षा में व्यक्तिगत मार्गदर्शन की भूमिका महत्वपूर्ण बनी हुई है।

साहित्य में शोध-अंतराल और निहितार्थ

उपलब्ध शैक्षणिक साहित्य से यह स्पष्ट है कि गुरुकुल परंपरा और डिजिटल शिक्षा को प्रायः अलग-अलग, विरोधी या परस्पर असंबंधित घटनाओं के रूप में देखा जाता है। तथापि, भारतीय शिक्षा के सतत विकास को एक निरंतर, एकीकृत ऐतिहासिक-शैक्षिक प्रक्रिया के रूप में समझने की गहरी आवश्यकता है। कुछ अध्ययन गुरुकुल के समावेशन की समस्याओं पर केंद्रित हैं, कुछ आधुनिक संस्थागत शिक्षा की संरचना विश्लेषित करते हैं, कुछ डिजिटल विभाजन के प्रश्नों को देखते हैं, किंतु इन तीनों चरणों के बीच सेतु-निर्माण और सामंजस्य-स्थापन की अनदेखी की जाती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली को गुरुकुल की मानवीय, नैतिक और आध्यात्मिक पहलुओं और डिजिटल शिक्षा के तकनीकी, लचीले और सुलभ पहलुओं को सचेतन रूप से संतुलित करने की आवश्यकता है।

उद्देश्य

1. भारत में गुरुकुल परंपरा से डिजिटल शिक्षा तक शिक्षा के बदलते स्वरूप, प्रमुख विशेषताओं और शैक्षिक परिवर्तन का विस्तृत विश्लेषण करना।
2. गुरुकुल एवं डिजिटल शिक्षा के बीच शिक्षण-पद्धति, शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध, मूल्य-शिक्षा, तकनीकी पहुँच, समावेशन और शैक्षिक प्रभावों के प्रमुख अंतरों तथा निरंतरताओं का तुलनात्मक विश्लेषण करना।

अनुसंधान कार्यप्रणाली

इस अध्ययन में गुणात्मक एवं तुलनात्मक शोध डिजाइन अपनाया गया। यह डिजाइन गुरुकुल परंपरा और डिजिटल शिक्षा के स्वरूप, विशेषताओं और परिवर्तन का गहन और विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के लिए अत्यंत उपयुक्त है। यह अध्ययन भारत को अध्ययन क्षेत्र के रूप में केंद्रित करता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली के ऐतिहासिक विकास, समकालीन स्थिति और भविष्य-दिशा पर ध्यान केंद्रित किया गया है। अध्ययन में द्वितीयक एवं प्रकाशित शैक्षणिक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। केवल सत्यापित, विश्वसनीय, चमकत-तमअपमूमक और अकादमिक रूप से मान्यता प्राप्त संदर्भों को शामिल किया गया है। 2025 तक उपलब्ध प्रासंगिक और मूल्यवान साहित्य को व्यवस्थित ढंग से चयनित किया गया। स्रोतों का चयन अध्ययन के दोनों उद्देश्यों से स्पष्ट, सार्थक और तार्किक संबंध के आधार पर किया गया। थीमैटिक विश्लेषण को मुख्य विश्लेषण तकनीक के रूप से अपनाया गया। स्रोतों से प्राप्त सामग्री को निर्धारित विषयगत श्रेणियों में व्यवस्थित, संगठित और विश्लेषित किया गया। शिक्षा का उद्देश्य एवं दर्शन, शिक्षण-पद्धति, गुरु/शिक्षक की भूमिका, शिष्य/शिक्षार्थी की भूमिका, अनुशासन, मूल्य-शिक्षा, ज्ञान-संचरण की प्रक्रिया, तकनीकी उपयोग, भौगोलिक पहुँच, सामाजिक समावेशन, मूल्यांकन पद्धति और शैक्षिक चुनौतियाँ, ये सभी महत्वपूर्ण आयाम तुलनात्मक विश्लेषण में सम्मिलित किए गए।

विषयगत विश्लेषण

गुरुकुल शिक्षा का उद्देश्य और दार्शनिक आधार

गुरुकुल शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक या व्यावसायिक ज्ञान प्रदान करना नहीं बल्कि छात्र का पूर्ण और समग्र व्यक्तित्व विकास करना था। शर्मा (2018) के अनुसार, गुरुकुल में शिक्षा का दार्शनिक आधार वेदांत और उपनिषद् की गहन शिक्षाओं में

निहित था। गुरु का प्राथमिक दायित्व छात्र को आत्मानुभव, आत्मदर्शन और आत्म-साक्षात्कार के मार्ग पर अग्रसर करना था। चरित्र-निर्माण, सदाचार, अनुशासन और नैतिकता गुरुकुल शिक्षा के केंद्रबिंदु थे। द्विवेदी (2017) ने कहा कि गुरुकुल व्यवस्था में शिष्य को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी, सामाजिक दायित्वशील और समाज के प्रति जिम्मेदार बनाया जाता था। गुरु-शिष्य संबंध में गुरु केवल एक शिक्षक नहीं बल्कि पूर्ण जीवन-मार्गदर्शक था जो छात्र के संपूर्ण विकास की जिम्मेदारी लेता था। वाजपेयी (2019) के अनुसार, गुरुकुल शिक्षा में ज्ञान को विभिन्न आयामों में विकसित किया जाता था: बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक।

गुरु-शिष्य संबंध और शिक्षण प्रक्रिया

गुरु-शिष्य संबंध गुरुकुल शिक्षा की आत्मा, केंद्रबिंदु और सबसे विशिष्ट विशेषता था। यह संबंध जन्म से लेकर जीवन-पर्यंत चलने वाला था और परस्पर विश्वास, सम्मान और सेवा-भाव पर आधारित था। फ्रेडरिक (2016) के व्यापक अध्ययन में दर्शाया गया कि गुरु-शिष्य संबंध पाश्चिमी शिक्षा प्रणाली के सामान्य शिक्षक-छात्र संबंध से बिल्कुल ही अलग, गहरा और अधिक व्यक्तिगत था। गुरु अपने शिष्य के केवल शैक्षणिक विकास नहीं बल्कि मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक संपूर्ण विकास की व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेता था। शिक्षण प्रक्रिया मौखिक परंपरा, प्रश्नोत्तर पद्धति, प्रत्यक्ष अनुकरण, वास्तविक और प्रायोगिक प्रशिक्षण के माध्यम से होती थी। जयलक्ष्मी और स्मृति रेखा (2022) ने गुरु-शिष्य संबंध की गहराई और महत्ता को समझाते हुए कहा कि यह संबंध छात्र के जीवन के सभी पहलुओं को समाविष्ट और प्रभावित करता था।

आधुनिक शिक्षा की ओर संक्रमण

19वीं सदी में भारत में शिक्षा का रूपांतरण एक क्रमिक, व्यापक और ऐतिहासिक प्रक्रिया थी। मैकॉली मिनट्स ऑफ एजुकेशन (1835) के बाद अंग्रेजी माध्यम की आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को राजकीय संरक्षण, वित्तीय समर्थन और प्रोत्साहन दिया गया। संस्थागत शिक्षा, वर्गीकृत पाठ्यक्रम, औपचारिक परीक्षा प्रणाली और शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थान आधुनिक भारतीय शिक्षा की परिभाषित विशेषताएँ बनीं। पटेल (2018) ने गुरुकुल प्रणाली की विशेषताओं का विश्लेषण करते हुए आधुनिक शिक्षा पर उसके प्रभाव को समझाया। शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय और स्थानीय भाषाओं से बदलकर अंग्रेजी हो गया, जिससे सांस्कृतिक संदर्भ में महत्वपूर्ण दूरी बढ़ी। गुरु-शिष्य का अत्यंत व्यक्तिगत और निरंतर संबंध औपचारिक प्रशिक्षक-छात्र के अधिक सामूहिक और सीमित संबंध में रूपांतरित हो गया। कुमार (2025) ने दर्शाया कि गुरुकुल परंपरा के कुछ मूल्य आधुनिक शिक्षा में प्रतिबिंबित हैं।

डिजिटल शिक्षा का उदय

21वीं सदी में सूचना-प्रौद्योगिकी, कंप्यूटर विज्ञान और डिजिटल संचार माध्यमों ने शिक्षा क्षेत्र में रूपांतरकारी और क्रांतिकारी परिवर्तन लाया। कोल (2024) के अनुसार, डिजिटल माध्यमों और ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों ने शिक्षा को अधिक सुलभ, लचीला, गतिशील और समावेशी बनाया। ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म (MOOC, Google Classroom Zoom आदि), ई-लर्निंग सामग्री, आभासी कक्षाएँ, डिजिटल मूल्यांकन उपकरण और इंटरैक्टिव मल्टीमीडिया सामग्री डिजिटल शिक्षा की मुख्य विशेषताएँ हैं। कोविड-19 महामारी (2020-2021) के बाद भारत में दूरस्थ और ऑनलाइन शिक्षा अचानक और तत्काल रूप से अनिवार्य हो गई, जिससे शिक्षा क्षेत्र को तुरंत डिजिटलीकरण के लिए बाध्य होना पड़ा। शंवाल (2024) का अध्ययन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के विकास और आधुनिकीकरण पर प्रकाश डालता है, जबकि भाटिया

(2025) ने गुरुकुल सीखने की प्रणाली को शिक्षा का अतीत और भविष्य दोनों माना है।

शिक्षक की बदलती भूमिका

गुरुकुल में गुरु के पास एक व्यापक, समग्र और बहु-आयामी भूमिका थी। वह केवल एक शिक्षक नहीं बल्कि एक आध्यात्मिक गुरु, सलाहकार, मार्गदर्शक, अनुशासक, रक्षक और पिता-समान आकृति था। आधुनिक संस्थागत शिक्षा में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है किंतु अधिक सीमित, विशेषीकृत और पाठ्यक्रम-केंद्रित हो गई। अधिकारी (2023) ने आधुनिक और समकालीन शैक्षणिक प्रणालियों में गुरुकुल शिक्षा के विशिष्ट प्रभाव का विश्लेषण करते हुए दर्शाया कि शिक्षक की भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है। डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षक सीधे ज्ञान-संचारक से परोक्ष रूप से एक सुविधादाता, मार्गदर्शक और तकनीकी सहायक बनकर रह गया है। तथापि, व्यक्तिगत मार्गदर्शन, मानवीय संपर्क और छात्र के संपूर्ण विकास की जिम्मेदारी की आवश्यकता आज भी विद्यमान और प्रासंगिक बनी हुई है।

शिक्षार्थी की भूमिका और स्वायत्तता

गुरुकुल में शिष्य को एक सेवक-शिष्य, प्रशिक्षु या अनुयायी की स्थिति में माना जाता था। वह गुरु के कठोर निर्देशन में सीखता था, अनुशासन का पूर्ण पालन करता था और अपनी इच्छाओं को गुरु की शिक्षाओं के अधीन रखता था। आधुनिक संस्थागत शिक्षा में छात्र को कुछ अधिक स्वायत्तता, चयन की स्वतंत्रता और विचार-अभिव्यक्ति की अनुमति मिलने लगी। डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा में शिक्षार्थी को व्यापक स्व-निर्देशित अधिगम, विषय-वस्तु का स्वतंत्र चयन, अपनी गति से सीखने और आत्मनिर्भर तरीके से ज्ञान अधिग्रहण करने की महत्वपूर्ण स्वतंत्रता मिलती है। जयलक्ष्मी और स्मृति रेखा (2022) के अनुसार, गुरुकुल में निर्देशित और गुरु-केंद्रित शिक्षा थी, जबकि डिजिटल युग में विकल्प, स्वायत्तता और छात्र-केंद्रितता अधिक प्रधान हैं। यह परिवर्तन सकारात्मक है किंतु इसका नकारात्मक पहलू यह है कि मार्गदर्शन और नियंत्रण की कमी से कुछ छात्र भटक भी सकते हैं।

पहुँच, समावेशन और डिजिटल विभाजन

गुरुकुल शिक्षा की भौगोलिक और सामाजिक पहुँच अत्यंत सीमित थी। शिक्षा प्राप्ति का अवसर सामाजिक-आर्थिक स्थिति, जाति-व्यवस्था और लिंग के कारणों से व्यवस्थित रूप से सीमित था। आधुनिक संस्कृतीय शिक्षा ने सैद्धांतिक रूप से सार्वभौमिक पहुँच, समावेशन और सामाजिक समता की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए। प्रकाश और सुमन (2024) के अध्ययन में भारत में गुरुकुल और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समावेशन के जटिल मुद्दों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। डिजिटल शिक्षा ने भौगोलिक सीमाएँ तोड़ीं और दूरवर्ती क्षेत्रों तक शिक्षा पहुंचाई। तथापि, इंटरनेट कनेक्टिविटी की अनुपलब्धता, कंप्यूटर और डिवाइस की कमी, डिजिटल साक्षरता की कमी और आर्थिक असमर्थता के कारण डिजिटल विभाजन एक गंभीर और बढ़ती हुई समस्या बन गई है।

मूल्य-शिक्षा और मानवीय आयाम

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली नैतिकता, सदाचार, आध्यात्मिकता और मानवीय मूल्यों पर अत्यंत बल देती थी। छात्र को केवल विषय-वस्तु का ज्ञान नहीं बल्कि सत्य, ईमानदारी, अहिंसा, करुणा, सेवा-भाव और सामाजिक दायित्व जैसे नैतिक मूल्यों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता था। आधुनिक संस्थागत शिक्षा मुख्यतः तकनीकी कौशल, व्यावसायिक दक्षता और बाजार-केंद्रित

प्रतिस्पर्धी योग्यता पर केंद्रित हो गई। डिजिटल शिक्षा, इंटरनेट और स्क्रीन-आधारित माध्यमों के अत्यधिक उपयोग ने मानवीय संबंधों, आमने-सामने के संपर्क और सामाजिक-भावनात्मक विकास में कमी की है। जोशी (2022) के अनुसार, शिक्षा और नैतिक-आध्यात्मिक मूल्यों का संबंध गुरुकुल परंपरा में अत्यंत गहरा, अभिन्न और केंद्रीय था। यह समन्वय आज की भौतिकवादी और डिजिटल शिक्षा में पुनः स्थापित करने की तत्काल और महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

शिक्षा की गुणवत्ता और भविष्य

भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए केवल गुरुकुल मॉडल अकेले अपर्याप्त है, न ही केवल आधुनिक संस्थागत प्रणाली। न तो पूर्ण डिजिटल शिक्षा ही समुचित समाधान है। भारत को इन तीनों शैक्षिक परंपराओं और दृष्टिकोणों की उपयोगी, सकारात्मक और मूल्यवान विशेषताओं को सचेतन, विवेकपूर्ण और संतुलित तरीके से संयोजित करना चाहिए। गुरुकुल का मानवीय स्पर्श, व्यक्तिगत मार्गदर्शन, नैतिक-आध्यात्मिक विकास और सामग्रिक दृष्टिकोण डिजिटल शिक्षा के तकनीकी कौशल, पहुँच की लचीलापन और आत्मनिर्भर अधिगम के साथ जुड़ना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) इसी समन्वित दृष्टिकोण की ओर एक महत्वाकांक्षी और सकारात्मक कदम है। अनावर और तिर्वीर (2025) के अध्ययन में पुणे के एक स्कूल में गुरुकुल-प्रेरित दृष्टिकोण के साथ आधुनिक शिक्षा को प्रभावी ढंग से जोड़ने का एक उत्साहवर्धक उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

चर्चा

भारत में शिक्षा का परिवर्तन गुरुकुल की अत्यंत व्यक्तिगत, मूल्य-केंद्रित, आध्यात्मिक और सामग्रिक व्यवस्था से लेकर आधुनिक संस्थागत, संरचनाबद्ध, विषय-विभाजित, परीक्षा-केंद्रित व्यवस्था तक हुआ है, और फिर डिजिटल, अकेन्द्रीय, स्व-निर्देशित, प्रौद्योगिकी-संचालित व्यवस्था तक पहुँचा है। यह परिवर्तन रैखिक, सरल या एकदिशीय नहीं बल्कि बहु-आयामी, परस्पर-जटिल और ऐतिहासिक-सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित रहा है। प्रथम उद्देश्य के संदर्भ में, गुरुकुल परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य आत्मोन्नति, आत्मज्ञान, आत्मनिर्भरता, सामाजिक दायित्व-बोध और आध्यात्मिक उन्नति था। आधुनिक शिक्षा में यह समग्र उद्देश्य क्रमशः संकीर्ण होता गया और ज्ञान-अधिग्रहण, परीक्षा में सफलता, व्यावसायिक कौशल और बाजार-प्रतिस्पर्धिता तक सीमित हो गया। डिजिटल शिक्षा ने तकनीकी दक्षता, सूचना-पहुँच, स्व-निर्देशित अधिगम और वैश्विक संपर्क को प्रोत्साहित किया है। तथापि, प्रत्येक चरण में कुछ मूल्यवान पहलुओं का हास हुआ है, जिससे शैक्षिक सर्वांगीणता में कमी आई है।

द्वितीय उद्देश्य से संबंधित तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट है कि गुरुकुल में शिक्षक-छात्र (गुरु-शिष्य) संबंध अत्यंत गहरा, व्यक्तिगत, आजीवन-दायरे वाला और समग्र विकास पर केंद्रित था। आधुनिक संस्थागत शिक्षा में यह संबंध औपचारिक, सीमित-अवधि वाला, पाठ्यक्रम-निर्देशित और प्रायः सतही हो गया। डिजिटल शिक्षा ने इसे और दूरस्थ, कभी-कभार और अक्सर असली मानवीय संपर्क के बिना बना दिया है। शिक्षण-पद्धति में भी परिवर्तन स्पष्ट है: गुरुकुल में मौखिक, प्रश्नोत्तरात्मक, अनुकरण-आधारित और अनुभव-केंद्रित; आधुनिक शिक्षा में व्याख्यान-आधारित, पाठ्यपुस्तक-केंद्रित; डिजिटल में स्व-गति से विषय-वस्तु अन्वेषण, ऑनलाइन संसाधन, इंटरैक्टिव कंटेंट। समावेशन के मामले में गुरुकुल में जाति-आधारित और लिंग-आधारित भेदभाव की गंभीर समस्या थी, जबकि आधुनिक और डिजिटल शिक्षा सैद्धांतिक रूप से सार्वभौमिक, समतावादी

पहुँच का दावा करती हैं, हालांकि व्यावहारिक रूप से डिजिटल विभाजन एक नई असमानता पैदा कर गई है।

निरंतरता के क्षेत्रों में, शिक्षा के मानवीय, नैतिक और आध्यात्मिक आयाम आज भी प्रासंगिक, आवश्यक और सर्वकालिक हैं। गुरुकुल की व्यावहारिक, जीवन-कौशल-आधारित, अनुभव-केंद्रित शिक्षा की परंपरा कौशल-आधारित शिक्षा में जारी है। व्यक्तिगत विकास, व्यक्तित्व-निर्माण और सर्वांगीण मानव विकास की अवधारणा भारतीय शिक्षा दर्शन में अभी भी केंद्रीय बनी हुई है। परिवर्तन के क्षेत्रों में देखें तो शिक्षा-माध्यम का रूपांतरण (संस्कृत/क्षेत्रीय भाषा से अंग्रेजी से डिजिटल-मिश्रित), ज्ञान-संचरण विधि का मौलिक परिवर्तन, शिक्षक-शिष्य संबंध का स्वरूप-परिवर्तन, शिक्षा के स्थान का रूपांतरण (आश्रम से स्कूल से वर्चुअल), पहुँच और समावेशन में आंशिक विस्तार किंतु डिजिटल विभाजन द्वारा नई बाधा स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। उपलब्ध शैक्षणिक अध्ययनों की साहित्य समीक्षा के साथ तुलना करते हुए, यह पाया जाता है कि अधिकांश अध्ययनों ने प्रायः गुरुकुल और आधुनिक शिक्षा की अलग से तुलना की है, कुछ आधुनिक और डिजिटल की तुलना करते हैं, किंतु कौल (2024), गुप्ता और राजेन्द्र सिंह (2021) जैसे कुछ महत्वपूर्ण अध्ययन गुरुकुल परंपरा की पुनरुत्थान की संभावना को रेखांकित करते हैं। यह शोध-पत्र दर्शाता है कि ये सभी परिवर्तन, गुरुकुल से आधुनिक से डिजिटल, भारतीय शिक्षा के विकास की एकीकृत, सतत और परस्परसंबद्ध प्रक्रिया हैं, न कि विरोधी या अलग-अलग घटनाएँ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस समन्वय-की-आवश्यकता को स्पष्ट रूप से मान्यता दी गई है और इसे व्यावहारिक शिक्षा-नीति में प्रतिबिंबित करने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष

भारतीय शिक्षा ने गुरुकुल की प्राचीन परंपरा से आधुनिक डिजिटल व्यवस्था तक एक महत्वपूर्ण यात्रा की है। गुरुकुल में व्यक्तिगत, मूल्य-केंद्रित और आध्यात्मिक दृष्टिकोण था। आधुनिक शिक्षा ने संस्थागत ढाँचा, वैज्ञानिक पद्धति और व्यावहारिक कौशल को बढ़ावा दिया। डिजिटल शिक्षा ने सूचना-प्रौद्योगिकी, दूरस्थ पहुँच और स्व-निर्देशित अधिगम को संभव बनाया। इन तीनों के बीच कुछ निरंतरताएँ हैं: मूल्य-शिक्षा की प्रासंगिकता, व्यावहारिक ज्ञान की महत्ता और व्यक्तिगत विकास का उद्देश्य। तथापि, महत्वपूर्ण परिवर्तन भी हुए हैं। गुरु-शिष्य का घनिष्ठ संबंध शिक्षक-छात्र के संस्थागत संबंध में बदल गया। आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा तकनीकी-व्यावसायिक कौशल के सामने पीछे छूट गई। डिजिटल माध्यमों ने मानवीय पहलुओं को कमजोर किया है। भारतीय शिक्षा प्रणाली को गुरुकुल की मानवीयता, नैतिकता और व्यक्तिगत मार्गदर्शन को आधुनिक प्रौद्योगिकी और विज्ञान के साथ संतुलित करना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी दिशा में एक सकारात्मक कदम है। भविष्य में भारतीय शिक्षा को समावेशी, मानवीय और तकनीकीकृत तीनों ही होना चाहिए। केवल डिजिटल साक्षरता पर्याप्त नहीं है; नैतिक साक्षरता, चरित्र-विकास और सामाजिक दायित्व भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं।

संदर्भ

1. अधिकारी, एस. (2023). गुरुकुल शिक्षा का आधुनिक शैक्षिक प्रथाओं पर प्रभाव. श्रवणतदंस व डिजिटल Educational Systems, 15, 80–89.
2. अधिकारी, टी. एन. (2023). गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में समावेशन. Gyanjyoti, 3(1), 99–107.
3. अनावर, एच. एच., और तिर्वीर, सी. (2025). पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा को जोड़ना: मूल्य-आधारित शिक्षा और

- कौशल विकास विद्यालय पुणे में गुरुकुल दृष्टिकोण के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप. *International Journal of Engineering Research & Technology* 4(IJERT), 13(4).
4. भाटिया, कपिल (2025). गुरुकुल सीखने की प्रणालीकृशिक्षा प्रणाली का अतीत और भविष्य. 10.25215/9141001427.
 5. द्विवेदी, एस. पी. (2017). गुरुकुल प्रणाली और वर्तमान शिक्षा. विद्या भारती प्रकाशन, वाराणसी.
 6. फ्रेडरिक, ए. जी. (2016). गुरुकुल प्रणाली और पाश्चिमी शिक्षा प्रणाली के बीच तुलनात्मक अध्ययन. *IRA International Journal of Education and Multidisciplinary Studies* 3(1), 50–58.
 7. गुप्ता, बी. के., और राजेन्द्र सिंह (2021). भारतीय प्राचीन एवं आधुनिक शिक्षा प्रणाली: एक गहन अध्ययन. *Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language*, 9(47), 11463–11468.
 8. जयलक्ष्मी, आर., और स्मृति रेखा, एस. (2022). गुरुकुल प्रणाली और इसकी शैक्षिक पद्धतियाँ. *श्रवणतदस of Educational and Teacher Innovation*, 1(2), 60–67.
 9. जयलक्ष्मी, जे., और स्मृति रेखा, वी. (2022). गुरुकुल शिक्षा का दर्शन: व्यक्तिगत शिक्षा और व्यावहारिक लोकतंत्र. *Journal of Philosophy of Education* 56(6), 1014–1025.
 10. जोशी, एम. के. (2022). शिक्षा और नैतिक मूल्य: गुरुकुल परंपरा की पुनर्परिभाषा. नंदन प्रकाशन, जयपुर.
 11. कौल, संजय (2024). गुरुकुल प्रणाली का विकास, प्रभाव और पुनरुत्थान: भारत के प्राचीन समग्र शिक्षा मॉडल का पुनः उदय (1–9). SSRN- [https://doi.org/10-2139/ssrn-5165891](https://doi.org/10.2139/ssrn-5165891)
 12. कुमार, आर. (2025). प्राचीन भारत की गुरुकुल प्रणाली का आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन. *RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal* 12(47½) 149&157- <https://doi.org/10-53573@rhimrj-2025-v12n7-016>
 13. मेदिपल्ली, आर. (2021). भारत के प्राचीन काल में गुरुकुल की भूमिका और विरासत. *Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies* 9, 15648–15664.
 14. मिश्र, ए. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में गुरुकुल परंपरा की झलक. *भारतीय शैक्षिक शोध पत्रिका*, 12(3), 45–52.
 15. पटेल, के. एल. (2018). प्राचीन भारतीय गुरुकुल प्रणाली की विशेषताएँ और आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव. *शैक्षिक विमर्श*, 5(4), 22–29.
 16. प्रकाश, दिव्य, और सुमन (2024). भारत में गुरुकुल और आधुनिक शिक्षा प्रणाली: एक अध्ययन. *Universal Research Reports* 11(41½) 53&57- <https://doi.org/10-36676@urr-v11-i1-01>
 17. शर्मा, आर. के. (2018). भारतीय शिक्षा का इतिहासरु प्राचीन से आधुनिक काल तक. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
 18. शुक्ला, एन. एल. (2016). गुरुकुल शिक्षा: एक सांस्कृतिक धरोहर. *भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन पत्रिका*, 7(2), 89–94.
 19. शंवाल, वी. (2024). भारत में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का विकास. *Journal of Education and Teacher Training Innovation* 1(42½) 60&67- <https://doi.org/10-61227@jetti-v1i2-65>
 20. वाजपेयी, पी. (2019). प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन. गंगा प्रकाशन, इलाहाबाद.
 21. जैन, एस., और शेल्ली, डी. (2015). गुरुकुल शिक्षा प्रणालीरु क्या यह वर्तमान शिक्षा में सकारात्मक परिवर्तन ला सकती

है. *Journal of Philosophy Culture and Religion*] 12] 10&12-